
गर्भ
गीता

गर्भ गीता

पंचरत्न : गीता सार, कमलनेत्र स्त्रोत, गजेन्द्र मोक्ष, गीता जी की आरती युक्त गर्भगीता

मूल्य : पाँच रुपये

प्रकाशक :

लक्ष्मी प्रकाशन

4734, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 ☎ 23917707, 23974978

प्रकाशक :
लक्ष्मी प्रकाशन
4734, बल्ली मारान,
दिल्ली-110006



निवेदन :
प्रचार में पुस्तकें बाँटने वाले सज्जन प्रकाशक से सम्पर्क करें, उन्हें पुस्तकें लागत मात्र पर दी जाएँगी।

अथ गर्भ गीता

श्री कृष्ण भगवान् जी का वचन है कि जो प्राणी इस गर्भ गीता का सद्भावना से विचार मनन करता है वह पुरुष फिर गर्भवास में नहीं आता है।

अर्जुनोवाच—हे कृष्ण भगवान्! यह प्राणी जो गर्भ-वास में आता है। वह किस दोष के कारण आता है? हे प्रभु जी! जब यह जन्मता है, तब इसको जरा आदि रोग लगते हैं। फिर मृत्यु होती है। हे स्वामी! वह

कौन-सा कर्म है जिसके करने से प्राणी जन्म मरण से रहित हो जाता है?

श्री भगवानोवाच—हे अर्जुन! यह मनुष्य जो है सो अन्धा व मूर्ख है जो संसार के साथ प्रीति करता है। यह पदार्थ मैंने पाया है और वह मैं पाऊँगा, ऐसी चिन्ता इस प्राणी के मन से उतरती नहीं। आठ पहर माया को ही मांगता है। इन बातों को करके बार-बार जन्मता और मरता है। वह गर्भ विषे दुःख पाता रहता है।

अर्जुनोवाच—हे श्री कृष्ण भगवान्! यह मन मद

मस्त हाथी की भाँति है, तृष्णा इसकी शक्ति है। यह मन तो पाँच इन्द्रियों के वश में है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार इन पाँचों में अहंकार बहुत बली है। सो कौन यत्न है जिससे मन वश में हो जाए?

श्री भगवानोवाच—हे अर्जुन! यह मन निश्चय ही हाथी की भाँति है। तृष्णा इसकी शक्ति है। मन पाँच इन्द्रियों के वश में है। अहंकार इनमें श्रेष्ठ है। हे अर्जुन! जैसे हाथी अंकुश (कुण्डा) के वश में होता है। वैसे ही मनरूपी हाथी को वश में करने के लिए ज्ञान रूपी अंकुश

है। अहंकार करने से यह जीव नरक में पड़ता है।

अर्जुनोवाच—हे भगवान्! जो एक तुम्हारे नाम के लिये वन खंडों में फिरते हैं। एक वैरागी हुए हैं। एक धर्म करते हैं। इनको कैसे जानें! जो वैष्णव हैं, वे कौन हैं?

श्री भगवानोवाच—हे अर्जुन! एक वे हैं जो मेरे ही नाम के लिए वनों में फिरते हैं। वे संन्यासी कहलाते हैं। एक वे हैं जो सिर पर जटा बाँधते हैं और अंग पर भस्म लगाते हैं। उनमें मैं नहीं हूँ क्योंकि इनमें अहंकार है इनको मेरा दर्शन दुर्लभ है।

अर्जुनोवाच—हे भगवान्! वह कौन-सा पाप है जिससे स्त्री की मृत्यु हो जाती है? वह कौन सा-पाप है कि जिससे पुत्र मर जाता है? और नपुंसक कौन पाप से होता है?

श्री भगवानोवाच—हे अर्जुन! जो किसी से कर्ज लेता है और देता नहीं, इस पाप से उसकी औरत मरती है और जो किसी की अमानत रखी हुई वस्तु पचा लेता है उसके पुत्र मर जाते हैं। जो किसी का कार्य किसी के गोचर आये पड़े और वह जबानी कहे कि मैं तेरा कार्य सबसे

पहले कर दूँगा पर समय आने पर उसका कार्य न करे। इस पाप से नपुंसक होता है। ये बड़े पाप हैं।

अर्जुनोवाच—हे भगवान्! कौन पाप से मनुष्य सदैव रोगी रहता है? किस पाप से गधे का जन्म पाता है? स्त्री का जन्म तथा टट्टू का जन्म क्यों कर पाता है और बिल्ली का जन्म किस पाप से होता है?

श्री भगवानोवाच—हे अर्जुन! जो भी मनुष्य कन्यादान करते हैं, और इस दान में मूल्य लेते हैं, वे दोषी हैं, वे मनुष्य सदा रोगी रहते हैं। जो विषय विकार

के वास्ते मदिरा पान करते हैं वे टट्टू का जन्म पाते हैं। और जो झूठी गवाही भरते हैं वे औरत का जन्म पाते हैं। जो औरतें रसोई बना के पहले आप भोजन कर लेती हैं और पीछे परमेश्वर को अर्घ्यदान करती हैं तो वे बिल्ली का जन्म पाती हैं और जो मनुष्य अपनी झूठी वस्तु दान करते हैं वे औरत का जन्म पाते हैं। वह गुलाम औरतें होती हैं।

अर्जुनोवाच—हे भगवान्! कई मनुष्यों को आपने सुवर्ण दिया है सो उन्होंने कौन-सा पुण्य किया है और

कई मनुष्यों को आपने हाथी, घोड़ा, रथ दिये हैं, उन्होंने कौन-सा पुण्य किया है?

श्री भगवानोवाच—हे अर्जुन! जिन्होंने स्वर्ण दान किया है उनको घोड़े वाहन मिलते हैं। जो परमेश्वर के निमित्त कन्यादान करते हैं सो पुरुष का जन्म पाते हैं।

अर्जुनोवाच—हे भगवान्! जिन पुरुषों के अन्दर विचित्र देह है उन्होंने कौन-सा पुण्य कार्य किया है? किसी-किसी के घर सम्पत्ति है, कोई विद्यावान है, उन्होंने कौन-सा पुण्य कार्य किया है?

श्री भगवानोवाच—हे अर्जुन! जिन्होंने अन्नदान किया है उनका सुन्दर स्वरूप है। जिन्होंने विद्या दान किया है वे विद्यावान होते हैं। जिन्होंने सन्तों की सेवा की है वे पुत्रवान होते हैं।

अर्जुनोवाच—हे भगवान्! किसी को धन से प्रीति है, कोई स्त्रियों से प्रीति करते हैं, इसका क्या कारण है समझाकर कहिये।

श्री भगवानोवाच—हे अर्जुन! धन और स्त्री सब नाश रूप हैं। मेरी भक्ति का नाश नहीं है।

अर्जुनोवाच—हे भगवान्! यह राजपाट किस धर्म के करने से मिलता है? विद्या कौन सा धर्म करने से मिलती है?

श्री भगवानोत्वाच—हे अर्जुन! जो प्राणी काशी में निष्काम भक्ति से तप करते हुए देह त्यागते हैं, वे राजा होते हैं और जो गुरु की सेवा करते हैं, वे विद्यावान होते हैं।

अर्जुनोवाच—हे भगवान किसी को धन अचानक बिना किसी परिश्रम से मिलता है सो उन्होंने कौन-सा

पुण्य कार्य किया है?

श्री भगवानोवाच—हे अर्जुन! जिन्होंने गुप्तदान किया है, उनको धन अचानक मिलता है। जिसने परमेश्वर का कार्य और पराया कार्य संवारा है वे मनुष्य रोग से रहित होते हैं।

अर्जुनोवाच—हे भगवान्! कौन पाप से अमली होते हैं और कौन पाप से गूँगे होते हैं और कौन पाप से कुष्ठी होते हैं?

श्री भगवानोवाच—हे अर्जुन! जो आदमी नीच कुल

की स्त्री से गमन करते हैं वो अमली होते हैं। जो गुरु से विद्या पढ़कर मुकर जाते हैं सो गूँगे होते हैं। जिन्होंने गौ घात किया है वे कुष्ठी होते हैं।

अर्जुनोवाच—हे भगवान्! जिस किसी पुरुष की देह में रक्त का विकार होता है वह किस पाप से होता है और दरिद्र होते हैं। किसी को खण्ड वायु होती है। और कोई अन्धे होते हैं तो कोई पंगु होते हैं. सो कौन से पाप से रहित होते हैं और कई स्त्रियाँ बाल विधवा होती हैं तो यह किसी पाप से होती हैं।

श्री भगवानोवाच—हे अर्जुन! जो सदा क्रोधवान रहते हैं, उन्हें रक्त विकार होता है। जो मलीन रहते हैं, वे सदा दरिद्री होते हैं। जो कुकर्मी ब्राह्मण को दान देते हैं, उनको खण्ड वायु होती है। जो पराई स्त्री को नंगी देखते हैं, गुरु की पत्नी को कुदृष्टि से देखते हैं, सो अन्धे होते हैं। जिसने गुरु और ब्राह्मण को लात मारी है, वो लंगड़ा व पंगु होता है। जो औरत अपने पति को छोड़कर पराये पुरुषों से संग करती है, सो वह बाल विधवा होती है।

अर्जुनोवाच—हे भगवन्! तुम परब्रह्म हो, तुमको

नमस्कार है। पहले मैं आपको सम्बन्धी जानता था परन्तु अब मैं ईश्वर रूप जानता हूँ। हे परब्रह्म! गुरुदीक्षा कैसी होती है, सो कृपा कर मुझको कहो।

श्री भगवानोवाच—हे अर्जुन! तुम धन्य हो, तुम्हारे माता-पिता भी धन्य हैं। जिनके तुम जैसा पुत्र है। हे अर्जुन! सारे संसार के गुरु जगन्नाथ है। विद्या का गुरु काशी, चारों वर्णों का गुरु संन्यासी है। संन्यासी उसको कहते हैं, जिसने सबका त्याग करके मेरे विषय में मन लगाया है सो ब्राह्मण जगत् गुरु है। हे अर्जुन! यह बात

ध्यान देकर सुनने की है। गुरु कैसा करें, जिसने सब इंद्रियाँ जीती हों, जिसको सब संसार ईश्वर मय नजर आता हो और सब जगत से उदास हो। ऐसा गुरु करे जो परमेश्वर को जानने वाला हो और उस गुरु की पूजा सब तरह से करे। हे अर्जुन! जो गुरु का भक्त होता है और जो प्राणी गुरु के सम्मुख होकर भजन करते हैं, उनका भजन करना सफल है। जो गुरु से विमुख हैं उनको सप्त ग्रास मारे का पाप है। गुरु से विमुख प्राणी दर्शन करने योग्य नहीं होते। जो गृहस्थी संसार में गुरु

के बिना है वो चांडाल के समान है, जिस तरह मदिरा के भंडार में जो गंगाजल है वह अपवित्र है। इसी तरह गुरु से विमुख व्यक्ति का भजन सदा अपवित्र होता है। उसके हाथ का भोजन देवता भी नहीं लेते। उसके सब कर्म निष्फल हैं। कूकर, सूकर, गदर्भ, काक ये सबकी सब योनियाँ बड़ी खोटी योनियाँ हैं। इन सबसे वह मनुष्य खोटा है, जो गुरु नहीं करता। गुरु बिना गति नहीं होती। वह अवश्य नरक को जायेगा। गुरु दीक्षा बिना प्राणी के सब कर्म निष्फल होते हैं। हे अर्जुन! जैसे चारों

वर्णों को मेरी भक्ति करना योग्य है, वैसे गुरु धार के गुरु की भक्ति करना योग्य है। जैसे गंगा नदियों में उत्तम है, सब व्रतों में एकादशी का व्रत श्रेष्ठ है। वैसे ही हे अर्जुन! शुभ कर्मों में गुरु सेवा उत्तम है, गुरुदीक्षा बिना प्राणी पशु योनि पाता है। जो धर्म भी करता है सो पशु योनि में फल भोगता है। वह चौरासी योनियों में भ्रमण करता रहता है।

अर्जुनोवाच—हे श्रीकृष्ण भगवान्! गुरुदीक्षा क्या होती है?

श्रीभगवानोवाच—हे अर्जुन! धन्य जन्म है उसका जिसने यह प्रश्न किया है। तू धन्य है। गुरुदीक्षा के दो अक्षर हैं! हरि ॐ। इन अक्षरों को गुरु कहता है। यह चारों वर्णों को अपनाना श्रेष्ठ है। हे अर्जुन! जो गुरु की सेवा करता है, उस पर मेरी प्रसन्नता है। वह चौरासी योनियों से छूट जायेगा। जन्म मरण से रहित हो नरक नहीं भोगता। जो प्राणी गुरु की सेवा नहीं करता वह साढ़े तीन करोड़ वर्ष तक नरक भोगता है। जो गुरु की सेवा करता है, उसको कई अश्वमेघ यज्ञ के पुण्य का

फल मिलता है। गुरु की सेवा मेरी सेवा है। हे अर्जुन! हमारे तुम्हारे संवाद को जो प्राणी पढ़ेंगे और सुनेंगे वो गर्भ के दुःख से बचेंगे उनकी चौरासी योनियाँ कट जायेगी।

इसी कारण इस पाठ का नाम गर्भ गीता है। श्री कृष्ण भगवान् जी के मुख से अर्जुन ने श्रवण किया है। गुरुदीक्षा लेना उत्तम कर्म है। उसका फल यह है कि नरक की चौरासी योनियों से जीव बचा रहता है, भगवान् बहुत प्रसन्न होते हैं।

श्री कमल नेत्र स्तोत्र

श्री कमल नेत्र कटि पीताम्बर, अधर मुरली गिरधरम्।
मुकुट कुण्डल कर लकुटिया, साँवरे राधेवरम्॥ १॥
कूल यमुना धेनु आगे, सकल गोपियन के मन हरम्।
पीत वस्त्र गरुड़ वाहन, चरन सुख नितसागरम् ॥ २॥
करत केल कलोल निश दिन, कुँज भवन उजागरम्।
अचर अमर अडोल निश्चय, पुरुषोत्तम अपरापरम्॥ ३॥
दीनानाथ दयालु गिरधर, कंस हिरणाकुश हरम्।
गल फूल माल विशाल लोचन, अधिक सुन्दर केशवम्॥ ४॥

बंशीधर वसुदेव छैया, बलि छल्यो वामनम्।
जल डूबते गज राख लीनो, लंक छेद्यो रावनम्॥५॥
सप्त द्वीप नव खण्ड चौदह भवन, कीनें रामजी एक पलम्।
द्रोपदी की लाज राखी कहाँ लों उपमा करम्॥ ६॥
दीनानाथ दयालु पूरण करुणा मय करुणा करम्।
कविदत्त दास विलास निशदिन नामजपत नटनागरम्॥७॥
प्रथम गुरुजी के चरण बन्दों यस्य ज्ञान प्रकाशितम्।
आदि विष्णु जुगादि ब्रह्म सेवते शिव शंकरम्॥ ८॥
श्री कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव यदुपतिम्।
श्री राम रघुवर राम रघुवर राम रघुवर राघवम्॥ ९॥
श्री राम कृष्ण गोविन्द माधव वासुदेव श्री बावनम्।

मच्छ कच्छ वाराह नरसिंह पाहि रघुपति पावनम् ॥ १० ॥
मथुरा में केशव राव विराजे गोकुल बाल मुकुन्द जी।
श्री वृन्दावन में मदनमोहन गोपीनाथ गोविन्द जी ॥ ११ ॥
धन्य मथुरा धन्य गोकुल जहाँ श्रीपति अवतरे।
धन्य यमुना नीर निर्मल ग्वाल बाल सखावरे ॥ १२ ॥
नवनीत नागर करत निरतत शिवविरंचि मनमोहितम्।
कालिन्दी तट करत क्रीड़ा बाल अद्भुत सुन्दरम् ॥ १३ ॥
ग्वाल बाल सब सखा बिराजे संग राधे भामिनी।
बंशी बट निकट यमुना मुरली की टेर सुहावनी ॥ १४ ॥
भज राघवेश रघुवंश उत्तम परम राजकुमार जी।
सीता के पति भगतन की गति जगत प्राण आधार जी ॥ १५ ॥

जनक राजा परण राखा धनुष बाण चढ़ावहीं।
सती सीता नाम जाके श्री रामचन्द्र प्रणावहीं॥ १६॥
जन्म मथुरा खेल गोकुल नन्द हरि नन्दनम्।
बाल लीला पतित पावन वासुदेव वसुदेवकम्॥ १७॥
श्री कृष्ण कलिमल हरण जाके जो भजे हरि चरण को।
भक्ति अपनी देओ माधव भवसागर के तरण को॥ १८॥
जगन्नाथ जगदीश स्वामी श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्।
द्वारिका के नाथ श्रीपति केशवं प्रणमाभ्यहम्॥ १९॥
श्री कृष्ण अष्टपदी पढ़त निशदिन विष्णु लोक सगच्छतम्।
गुरुरामानन्द नीमानंदस्वामी कविदत्तदास समाप्तम्॥ २०॥

गजेन्द्र मोक्ष

नाथ कैसे गज को फन्द छुड़ायो यह अचरज मोहि आयो ।। टेक
गज और ग्राह लड़त जल भीतर, लड़त-लड़त गज हारयो ।
जौं भर सूंड रही जल ऊपर तब हरि नाम पुकारयो ।। नाथ…
शबरी के बेर, सुदामा के तन्दुल रुचि-रुचि भोग लगायो ।
दुर्योधन की मेवा त्यागी साग विदुर घर खायो ।। नाथ…
पैठ पाताल काली नाग नाथ्यो फण पर नृत्य करायो ।
गिरि गोवर्धन कर पर धारयो नन्द का लाल कहायो ।। नाथ…
असुर बकासुर मारयो दावानल पान करायो ।

खम्ब फाड़ हरिणाकुश मारयो नरसिंह नाम धरायो ।। नाथ...
अजामिल गज गणिका तारी द्रोपदी को चीर बढ़ायो।
स्तन पान करत पूतना मारी कुब्जा का रूप बनायो ।। नाथ...
कौरव पाण्डव का युद्ध रचायो कौरव मार हटायो।
दुर्योधन का मान घटायो मोहि भरोसा आयो ।। नाथ...
सब सखियाँ मिल बन्धन बाँधियो रेशम गाँठ बन्धायो।
छूटे नाहिं राजा जी का कंगन कैसे गोवर्धन उठायो ।। नाथ...
योगी जाको ध्यान धरत है ध्यान धरत नहिं आयो।
सूर श्याम प्रभु तुम्हारे मिलन को यशुदा की धेनु चरायो ।। नाथ...

श्री गीता जी की आरती

जय गीता माता श्री जय गीता माता।
सुख करनी दुःख हरनी तुमको जग गाता।
टेक—जय गीता माता, मैया जय गीता माता।
सुख करनी दुःख हरनी तुमको जग गाता॥
अज्ञान मोह ममता को छिन में नाश करे,
सत्य ज्ञान का मन में तू प्रकाश करे।

शरण मेरी जो आवे तेरी मति ग्रहण करे,
पाप ताप मिट जावें निर्भय भव सिंधु तरे।
रणक्षेत्र में अर्जुन जब शोकाधीर हुआ,
कर्तव्य कर्म तज बैठा बहुत मलीन हुआ।
तब कृष्णचन्द्र के मुख से तुमने अवतार लिया,
तत्त्व बात समझाकर उसका उद्धार किया।
शरीर जन्मते मरते आत्मा अविनाशी,
शरीर को दुःख व्यापे आत्मा सुख राशी।

अतः शरीर की ममता मन से त्याग करो,
आत्मब्रह्म को चीन्हों उससे अनुराग करो।
निष्काम कर्म नित्य करके जग का उपकार करो,
फल वांछा को त्यागो सद्व्यवहार करो।
मन को वश में करके इच्छा त्याग करो,
निष्काम जग में रहकर हरि से अनुराग करो।
यह उपदेश तेरे जो नर मन में लावे,
भगवान भवसागर से वह क्यों न तर जावे।

गीता सार

क्यों व्यर्थ चिन्ता करते हो? किससे व्यर्थ डरते हो? कौन तुम्हें मार सकता है? आत्मा न पैदा होती है, न मरती है।

जो हुआ, वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है। जो होगा, वह भी अच्छा ही होगा। तुम भूत का पश्चाताप् न करो। भविष्य की चिन्ता न करो। वर्तमान चल रहा है।

तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो? तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया? तुमने क्या पैदा किया था, जो नाश हो गया? न तुम कुछ लेकर आये, जो लिया, यहीं से लिया। जो दिया, यहीं पर दिया। जो लिया, इसी (भगवान) से लिया। जो दिया, इसी को दिया। खाली हाथ आए, खाली हाथ चले। जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा। तुम इसे अपना समझ कर मग्न हो रहे हो। बस, यही प्रसन्नता तुम्हारे दुःखों का कारण है।

